Government of Karnataka
Karnataka School Examination and Assessment board
II Year PUC Supplementary Examination May/June -2023
Scheme of Evaluation

Subject: HINDI **Subject Code: 03**

सूचनाः 1) सभी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखना आवश्यक है ।
2) प्रश्नों की क्रम संख्या लिखना अनिवार्य है ।
3) बहु वैकल्पिक प्रश्नों (1 से12) के उत्तर एक ही स्थान पर लिखना अनिवार्य है।

I. अ) गध्य भाग के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर लिखिए: **6x1=6**

1. iv) भिक्षुक
2. ii) झूठे से
3. i) इंदौर
4. ii) 1962
5. iii) फुलकारी को
6. ii) 55 फुट

आ) एकांकी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर लिखिए: **4x1=4**

7. iv) मंझली बहू
8. i) बाज़ार
9. i) पिता
10. iii) आभा

इ) कोष्टक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए। **5x1=5**
(युग, समय, दान, सत्य, बाग)

11. i) बाग
    ii) युग
    iii) दान
    iv) समय
    v) सत्य

ई) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए: **5x1=5**

12. i)	खिल्ली उडाना	2.	हँसी उड़ाना ।
ii)	तारे गिनना	1.	प्रतीक्षा करना।
iii)	आँखों का तारा	4.	बहुत प्यारा |
iv)	जी चुराना	5.	मेहनत से बचना |
v)	कमर कसना	3.	तैयार होना ।

II. अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **3x3=9**

13. पेड़ के नीचे बैठकर सुजान विचारों में मग्न हो गया। अपने ही घर में उसका यह अनादर। वह कोई अपाहिज नहीं, घर का सब काम करता है, फिर भी अनादरउसी ने कमाया !, उसी ने सबकुछ किया-, फिर भी कोई अधिकार नहींअब वह द्वार का कुत्ता है !, जो रूखासूखा मिले-, वही खाकर पड़ा रहे। ऐसे जीवन को धिक्कार है|

14. पिता जी रसोई घर को भटियारखाना कहते थे। क्योंकि उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। इसीलिए पिताजी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ।

15. विश्वेश्वरय्या का जन्म मैसूर राज्य के कोलार जिले के मुधेनहल्ली इस छोटे से गाँव में 15 सितंबर 1861 को हुआ। उनका पूरा नाम था मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या था। विश्वेश्वरय्या के माता – पिता बहुत ही गरीब थे। उन्हे पढाने लिखाने की शाकति उनमे नही थी। फिर भी विश्वेश्वरय्या के मन मे पढ़ने की लगन थी। वे दिल लगाकर पढते थे।

16. जैसे ही दावत खत्म हुई, सारे मेहमान जा चुके तो काफी देर होने के बावजूद शामनाथ ने माँ के कोठरी को दखाजा खटकाने लगे। अन्दर घुसते ही अपनी, डरी हुई माँ को झुमते हुए आगे बढ़कर आलिंगन में भर लिया और कहा कि 'ओ अम्मी। तुमने तो आज रंग ला दिया। साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ?

17. नारद ने जब समझा कि उमकी वीणा ही भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है, तो उन्होने वही किया। तुरंत साहब ने चपरासी को हुक्म किया कि वह भोलाराम की केस फाइल लाए। चपरासी ने नाम निश्चित करने फिरसे पूछा तो साहब जोरसे बोला भोलाराम 'तुरंत कंही से आवाज आई की कौन पुकार रहा है मुझे? पेंशन का ऑर्डर आ गया.

आ) निम्नलिखित वाक्य किस ने किससे कहे। **4x1=4**

18. यह वाक्य भिक्षुक ने सुजान भगत से कहा।
19. गंगा मैया ने लेखक से कहा।
20. यह वाक्य मन्नू भंडारी के पिता जी के एक दकियानूसी मित्र ने पिताजी से कहा |
21. मिस्टर शामनाथ ने अपनी पत्नी से कहा।

इ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : **2x3=6**

22. **प्रसंग** : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।
संदर्भ : कर्त्तव्य करने की महत्ता का वर्णन करते हुए लेखक इस वाक्य को पाठकों से कहते हैं।
स्पष्टीकरण : डॉश्यामसुन्दर दास कहते हैं कि कर्त्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। . संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है। घर में, पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के बीच मनुष्य को अपना कर्त्तव्य निभाना पड़ता है। समाज के प्रति, देश के प्रति सच्चा कर्त्तव्य निभाने से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है। ऐसे सामाजिक न्याय को समझने पर हम लोग प्रेम के साथ कर्त्तव्य निभा सकते हैं।
23. **प्रसंग** : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी।
संदर्भ : लेखक के अंतिम प्रश्न के उत्तर में गंगा मैया कहती हैं कि प्रकृति सर्वशक्तिमान है। ऐसा पहले भी हुआ है, पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं।
स्पष्टीकरण : लेखक जब अंतिम प्रश्न करता है कि माँ, भविष्य में क्या संभावनाएँ हैं? तब गंगा मैया कहती है कि यह प्रकृति सर्वशक्तिमान है। पतन जब अधिक होना शुरू हो जाता है, तभी उत्थान का मार्ग खुलता है ।

24. **प्रसंग** : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'भोलाराम का जीव' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : भोलाराम के जीव के बारे में चित्रगुप्त ने यमदूत से पूछा। तब यह वाक्य यमदूत ने धर्मराज से कहा।
स्पष्टीकरण : जब धर्मराज और चित्रगुप्त दोनों भोलाराम के जीव के न आने के बारे में चर्चा कर रहे थे तथा यमदूत के लापता होने की बात कर रहे थे, तब यमदूत वहाँ पहुँच जाता है। यमदूत का कुरुप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। यमदूत को देखकर चित्रगुप्त चिल्ला उठे – 'इतने दिन तुम कहाँ रहे? भोलाराम का जीव कहाँ है?' तब यमदूत ने कहा कि, दयानिधानआज तक मैंने धोखा नहीं खाया था पर भोलाराम का ! जीव मुझे चकमा दे गया।

25. **प्रसंग** : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'यात्रा जापान की' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका ममता कालिया हैं।
स्पष्टीकरण : जापान की राजधानी तोक्यो का कार्यक्रम समाप्त कर लेखिका का दल बुलेट ट्रेन से ओसाका शहर पहुँचा। ओसाका स्टेशन पर उच्चायोग के प्रतिनिधि वैन लेकर इंतजार कर रहे थे। वैन बहुत क्षिप्र गति से चल रही थी। सड़क की दोनों ओर बड़ी इमारतें थीं। यहाँ अजनबी नामपटों के साथ कुछ ऐसे नामपट भी झलक जाते हैं जिनकी हम भारतीयों को सुनने की, देखने की आदत पड़ गयी है जैसे हिताची, मित्सुबिशि, काकुरा आदि। चमचमाती इमारतों के बाद रंगबिरंगे पेड़ों का सिलसिला शुरू हो जाता है। लेखिका कहती हैं – यहाँ प्रकृति की तूलिका में सात से अधिक रंग दिखाई दे रहे हैं – मोमिजी की पत्तियाँ लाल हैं, कुछ नारंगी और गुलाबी रंग भी मिले हैं, साकुरा के पेड़ सफेद फूलों से ढंके हैं। हरा रंग यहाँ चटक हरा है जैसे पत्तों पर किसी चित्रकार ने एक बार फिर रंग पोत दिया हो।

III. **अ)** एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए: **6x1=6**

26. राम की
27. मुंख मे
28. कायरता
29. देश को दुश्मनों से बचाना है
30. राजस्थान में
31. गंगा

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **2x3=6**

32. रहीम मनुष्य की प्रतिष्ठा के बारे में कहते हैं कि यदि मनुष्य विद्याबुद्धि न हासिल करे-, दान-धर्म न करे तो इस पृथ्वी पर उसका जन्म लेना व्यर्थ है। वह उस पशु के समान है जिसकी सींग औरपूँछ नहीं। विद्याधर्म से ही मनुष्य की प्रतिष्ठा बढ़ती है-बुद्धि और दान-, यश मिलता है। आत्मसम्मान के बिना सब शून्य है। प्रतिष्ठा के बिना मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ती है।

33. कवयित्री महादेवी वर्मा जी का विश्वास है कि वेदना एवं करुणा उन्हें आनंद की चरमावस्था तक ले जा सकते हैं। उन्होंने वेदना का स्वागत किया है। उनके अनुसार जिस लोक में दुःख नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जब तक मनुष्य दुःख न भोगे, अंधकार का अनुभव न करे तब तक उसे सुख एवं प्रकाश के मूल्य का आभास नहीं होगा। जीवन नित्य गतिशील है। अतः इसमें उत्पन्न होनेवाले संदर्भो को रोका नहीं जा सकता। जीवन की महत्ता परिस्थितियों का सामना करने में है, उनसे भागने में नहीं। कवयित्री अमरों के लोक को ठुकराकर अपने मिटने के अधिकार को बचाये रखना चाहती हैं।

34. कर्नाटक की गौरव गाथा गाते हुए कवि मानव कह रहे हैं कि दुनिया भर में माथा ऊँचा करनेवाले टीपू सुलतान की वीरता, अपने बलिदान के लिए प्रसिद्ध रानी चेन्नम्मा इस धरती की देन है। प्रकृति का सुंदर रूप यहाँ देखने को मिलता है। ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमुख क्रीडास्थल यह कर्नाटक ही है। भारतीयता कन्नड़ नाडू में बहु रूपों में संवरती है। कर्नाटक में कावेरी नदी बहती है। यहाँ के बसवेश्वर, अक्कमहादेवी, रामानुज जैसे संतों ने अपने ज्ञान से संसार को प्रकाशि किया है। इस प्रकार धर्म, कला एवं संस्कृति का आराधना का केन्द्र है कर्नाटक।

35. कवि दुष्यंत कुमार कहते हैं कि समाज में अब तो दुःख, दर्द, पीड़ा हद से गुजर गयी है। दुःख के इस महा पर्वत को अब पिघलना ही चाहिए। जैसे हिमालय से गंगा की धार निकली वैसे दुःख की कोई राह निकलनी चाहिए। कवि यहाँ पर परिवर्तन की, क्रांति की बात कर रहे हैं। समाज में बदलाव लाना चाहते हैं।

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : **2x4=8**

36. **प्रसंग** : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के रैदासबानी' नामक कविता से लिया गया है जिसके रचयिता संत रैदास हैं।

स्पष्टीकरणः इस पद्य में रैदास ने श्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार श्रम, लगन, निष्ठा व ईमान से किया गया प्रत्येक कार्य श्रेष्ठ व फलदायक होता है। रैदास स्वयं कड़ी मेहनत कर कार्य करना चाहते हैं। आजीवन इसी तरह श्रम साध कर अपनी जिन्दगी गुजारना चाहते हैं। ऐसे नेक कमाई कभी निष्फल नहीं होगी, ऐसा विश्वास रैदास को भरपूर है।

विशेष : भाषा – ब्रज। श्रम की महत्ता का महत्व दर्शाया है।

अथवा

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'बिहारी के दोहे' से लिया गया है, जिसके रचयिता बिहारी लाल जी हैं।

संदर्भ : कवि इस शाश्वत सत्य को उद्घाटित करते हैं कि इस दुनिया में निर्बल व्यक्ति को सभी दबाते हैं।

भाव स्पष्टीकरण : कवि बिहारी कहते हैं कि संसार में पापकर्म-, राजा और रोग, यह तीनों हमेशा निर्बल को ही सताते हैं। कमजोर व्यक्ति कई बार परिस्थितिवश पाप कार्य में लीन हो जाते हैं। पाप को छिपाने की ताकत भी उनमें नहीं होती है परिणामस्वरूप वे उसके कारण दण्डित भी किये जाते हैं। राजा का क्रोध भी निर्बल लोगों पर ही उतरता है। भूख और (शासक) चिन्तावश निर्बल लोग रोगी हो जाते हैं। उनमें बीमारी से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता नहीं रह जाती है और वे बीमारी से ग्रसित होते जाते हैं |

विशेष : बिहारी ने ब्रजभाषा में यह दोहा रचा है। शैली वर्णनात्मक है। छन्द दोहा है।

37. प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गहने' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुवेंपू हैं।

संदर्भ : कुवेंपु जी आपसी रिश्तों में प्रेम को, गहनों से भी कई ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। वे कहना चाहते है की भौतिक पदार्थ (सोना, आभूषण वगैरह) माँ की ममता और पुत्री के स्नेह के आगे कुछ भी महत्व नहीं रखते।

भाव स्पष्टीकरण : बेटी माँ से गहनों की व्यर्थता के बारें में कह रही है। वह कहती है कि मेरा यह प्यारा बचपन जिसमें तुमने मुझे खूब प्यार और स्नेह दिया है, मेरे लिए मेरा यह बचपन गहने से भी बढ़कर है। तुम्हारा मातृत्व सुख दुनिया का सबसे बड़ा सुख है। हमारा यह सुख (मेरा बचपन का और तुम्हारा मातृत्व का) सबसे बड़ा सुख है। इस सुख की प्राप्ति धन से या आभूषणों से नहीं की जा सकती। माँ! जब हमारे पास इतनी बड़ी संपत्ति है तब फिर अन्य संपत्ति या गहने क्यों चाहिए? इस प्रकार कुवेंपु जी माँ-बेटी के बचपन और मातृत्व के सुख को सब सुखों से बढ़कर बताते हैं।

अथवा

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठय पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने उस वृक्ष को हमेशा दोस्त के रूप में माना था जिसके कट जाने पर उसकी यादें कवि को बारबार सताती है। वह हमेशा दरवाजे पर बूढ़े चौकीदार की - तरह तैनात रहता था।

भाव स्पष्टीकरण : कवि कई दिनों बाद घर लौटा तो देखा कि उसके घर के निकट जो पेड़ हुआ करता था वह कट गया है। वह पेड़ जिसके इर्दगिर्द उसका बचपन बीता-, कहीं नहीं

था। वह पेड़ बूढ़ा हो गया था पर ठाठ उसकी हमेशा रहती थी। वह एक बूढ़े चौकीदार सा नियुक्त उसके घर की रखवाली करता था।

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। : **2x5=10**

38. रजवा मूलराज के परिवार में दस वर्षों से काम कर रही थी। छोटी बहू बेला में उसे काम से हटा दिया। उदास होकर वह छोटी भाभी के पास जाकर शिकायत करते हुए कहती है – "माँ जी, आज उन्होंने मुझे काम से हटा दिया। मैं इतने बरस से आप लोगों की सेवा कर रही हूँ। आज तक कभी किसी ने इस प्रकार अनादर नहीं किया था। आप तो मुझे अपने पास ही रखिए। मैं आज से उनका काम करने नहीं जाऊँगी।"

अथवा

बेला अपने मायके इसलिए जाना चाहती थी क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि जैसे वह अपरिचितों में आ गयी है। कोई उसे नहीं समझता और वह किसी को नहीं समझती। जब वह जाती है तो बड़ी भाभी, मँझली और माँजी तक खड़ी हो जाती थीं। उसके सामने कोई हँसता नहीं। उससे अधिक समय तक कोई बात नहीं करना चाहता। सब उससे ऐसा डरती है जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से। बेला अपने मायके जाना चाहती थी कि वह आदर, सत्कार, सुख, आराम चाहती थी।

39. भारती महाकवि भारवि के शास्त्रार्थ से प्रभावित होकर उनसे मिलने के लिए उनके घर आती है। भारवि उस समय घर पर नहीं थे। भारती ने सुशीला को बताया कि उसने भारवि को उषा बेला में मालिनी तट पर देखा था। उस समय भारवि ध्यान मग्न थे। उसने उनका ध्यान भग्न नहीं किया। श्रीधर ने भारती से कहा कि जैसे ही भारवी आएगा तुम्हें उसकी सूचना दे दी जाएगी। भारती ने कहा कि वह स्वयं अगले दिन सुबह आएगी।

अथवा

शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा कि पंडितों की हार से उसका अहंकार बढ़ता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमंड हो गया है। उसका गर्व सीमा को पार कर रहा है। भारवि आज संसार का श्रेष्ठ महाकवि है। दूर-दूर के देशों में उसकी समानता करने वाला कोई नहीं है। उसने शास्त्रार्थ में बड़े से बड़े पण्डितों को पराजित किया है। उसका पांडित्य देखकर पिता को बहुत प्रसन्नता होती है। पर भारवि के मन में धीरे-धीरे अहंकार बढ़ता जा रहा है। पिता चाहते हैं कि भारवि और भी अधिक पंडित और महाकवि बने। पर अहंकार उन्नति में बाधक है। इसलिए पिता ने अहंकार पर अंकुश रखना चाहा। जिसे अपने पांडित्य का अभिमान हो जाता है वह अधिक उन्नति नहीं कर सकता। इसी कारण से पिता भारवि को समय-समय पर मूर्ख और अज्ञानी कहते हैं। पिता नहीं चाहते हैं कि अहंकार के कारण उसके पुत्र की उन्नति रुक जाये।

V. **अ)** निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए: **4x1=4**

40. i) बालक ने रोटी खाई |
ii) मैं आपकी इज्जत करता हूँ।
iii) किसी ने मेरी पुस्तक देखी?
iv) तुम जा सकते हो।

आ) निम्नलिखित वक्यों कों सूचनानुसार बदलिए: **3x1=3**

41. i) विनय गाना गाता है ।
ii) अजयपाल तिलमिला उठा था।
iii) वह अपना काम सुचारु रूप से करेगा।

इ) अन्य लिंग रूप लिखिए: **3x1=3**

42. i) युवती ii) लेखिका iii) दासी

ई) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए: **2x1=2**

43. i) अपरिचित ii) जलचर

उ) निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नये श्ब्दों का निर्माण कीजिए : **2x1=2**

44. i) अ+ शिक्षित ii) निर + दोष

ऊ) निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कर लिखिए: **2x1=2**

45. i) देवर + आनी ii) स्वच्छ + ता

VI. **अ)** किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: **1x5=5**

46. i) रूपरेखा : प्रस्तावना - इंटरनेट का मतलब-इंटरनेट का इतिहास-इंटरनेट का महत्त्व-इंटरनेट आज की आवश्यकता - उपसंहार ।

ii) रुपरेखा: मनोरंजन का अर्थ - मनोरंजन के बिना स्वास्थ्य - प्राचीन काल में मनोरंजन - मनोरंजन के आधुनिक साधन - अनेक आधुनिक साधन - उपसंहार।

iii) रुपरेखा: समाज सेवा का अर्थ - व्यक्ति और समाज- समाज सेवा क्यों- समाज सेवा के क्षेत्र और-- उपसंहार।

अथवा

सरस्वतीपुरम

मैसूर

दिनांकः 3 अप्रैल 2023

प्रिय मित्र राजेश,

सप्रेम नमस्ते।

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार जनवरी की पहली तारीख को नया वर्ष मनाया जाता है। भारतीय परंपरा के अनुसार हमारे देश में प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को भी नया वर्ष मनाया जाता है। इस दिन को 'गुड़ी पड़वा' या 'युगादि' भी कहते हैं। इस वर्ष यह 31 मार्च को मनाया गया। मैं अपनी तथा अपने परिवार की ओर से तुम्हें 'नव वर्ष की शुभकामनाएँ' भेज रहा हूँ और कामना करता हूँ कि यह नया वर्ष तुम्हारे जीवन में नई उमंग और उत्साह लाये।माताजी को सादर-प्रणाम, सोनिया को प्यार।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
गोकुल

सेवा में,
राजेश

आ) निम्नलिखित अनुच्छेद पढकर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **5x1=5**

47. i) मनुष्य सुखाभिलाषी
ii) आनंद प्राप्त
iii) उससे जरूरत की चीजों के अतिरिक्त ऐार्य और विलास की वस्तुएँ खरीदता है
iv) शून्य
v) आसपास के वातावरण-

इ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए: **5x1=5**

48. i) बिना मेहनत के सफलता नहीं मिलती
ii) बेरोजगारी की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।
iii) मैंने कल किताबों पर बहुत पैसा खर्च किया।
iv) स्कूल सीखने की नींव हैं
v) विद्यार्थी जीवन स्वर्णिम जीवन है।

***** **शुभकानाएँ** ****